⇒ अमेरिका से भारत के संबंध

(INDIA's Relations with America)

15 अगस्त 1947 के दिन भारत द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करने की इसकी पूरी संभावना थी कि इसके और अमेरिका के मध्य घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित होंगे। पश्चिमी राष्ट्रों में अमेरिका ही एक ऐसा राज्य था जो भारत की राष्ट्रीय आकांक्षाओं से सहानुभूति रखता था। वहां के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत के समर्थन में ब्रिटिश सरकार पर राजनैतिक दबाव डाला था. साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के साथ जुड़ी हुई अलोकप्रियता एवं बदनामी अमेरिका को नहीं मिली थी। इसके साथ ही अमेरिका एक महान आर्थिक और विश्व का सबसे संपन्न राष्ट्र था. एक ऐसे राष्ट्र का सहयोग और इसकी मित्रता भारत के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक सिद्ध हो सकती थी। दूसरी तरफ, अमेरिका के लिए भारत की मित्रता लाभदायक थी। भारत की भौगोलिक स्थिति, यहां की विशाल जनसंख्या तथा आर्थिक विकास की संभावनाएं उसे भविष्य की बड़ी शक्ति न होते हुए भी भारत प्रभावशाली शक्ति थी। जिसके मत और नीतियां जवाहरलाल नेहरू के अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व से संचालित होकर एशिया की अन्य शक्तियों को प्रभावित करने की क्षमता रखती थी। इन तथ्यों के बावजूद भारत-अमेरिकी संबंधों में वह घनिष्ठता नहीं आ सकी। अमेरिका के लिए शीतयुद्ध जीतने की आवश्यकता तथा उसका अभिन्न अंग था इस शीतयुद्ध में शामिल बनना भारत के लिए असंभव था। वह शीतयुद्ध से तटस्थ रहना चाहता था. भारत विदेश नीति की यह तटस्थता न तो अमेरिका को पसंद थी और न अमेरिकी गुटबंदी की राजनीति स्वतंत्र भारत को स्वीकार थी।

ऐसे माहौल में जापान-अमेरिकी संबंध उलझन और अव्यवस्था से ग्रस्त हो जाता। फिर भी, अपने-अपने दूरगामी हितों के चलते दोनों के लिए एक-दूसरे से अलग रहना भी संभव नहीं था। इन हितों जापान तथा अमेरिकी संबंधों में निम्नलिखित तीन प्रवृत्तियां नज़र आईं।—

1. अमेरिका द्वारा बड़े पैमाने पर जापान को आर्थिक सहायता,
2. दोनों देशों के द्वारा अपने-अपने राजनीतिक मार्गों का अनुसरण तथा
3. साम्यवादी संकट के विरुद्ध अमेरिका द्वारा जापान को सहायता देने की तत्परता।

जापान और चीन की प्रारंभिक आर्थिक स्थिति लगभग समान होने के बावजूद दो विभिन्न मार्गों पर चलना सीखा कि ये दोनों देश अपने-अपने आर्थिक विकास के लिए उद्यम करते रहे थे। अमेरिका का ऐसा विश्वास था कि यदि चीन ने साम्यवादी साधनों को अपनाकर प्रगति कर ली और जापान लोकतंत्र के मार्ग पर चलकर अपनी समस्या का समाधान नहीं कर सका तो लोकतंत्र की तुलना में साम्यवाद का नैतिक बल बढ़ जाएगा और तब साम्यवाद को सीमित करने की अमेरिकी नीति की सफलता की संभावना नहीं रह जाएगी। जापान को साम्यवादी होने से बचाने के दृष्टि से अमेरिका हर संभव उपाय किया। इस नीति के फलस्वरूप में 1 जुलाई 1950 तथा जून 1964 के मध्य अमेरिका द्वारा जापान को पांच अरब चौहत्तर करोड़ तीस लाख डॉलर की आर्थिक सहायता सहयोग, अनुदान या अन्य रूपों में दी।